उत्तरी काली चमकीली मृदभांड

Mandip kumar chaurasiya

Assistant professor(Guest)

Dept. of A.I.H. & Archaeology

Patna university, patna-800005

M.A. Semester - III

Paper/CC – 11 Pre and Proto History of India and Ancient Potteries

इस तरह के पात्र खण्ड सर्वप्रथम तक्षशिला के उत्खनन से सन 1934 ई० में प्रकाश में आये थे| पाकिस्तान के रावलपिंडी जिले में स्थित तक्षशिला के पुरास्थल पर क्रमागत तीन टीले है जिन्हें क्रमश: भीर टीला, सिरकप तथा सिरसुख कहा जाता है| तक्षशिला के भीर टीले से उत्तरी काली चमकीली पात्र-परम्परा के मृदभांड मिले थे| मार्शल ने इसे 'काली काचित पात्र-परम्परा' के नाम से अभिहित किया था|

इस पात्र परम्परा के आधार पर बाद में विकसित होने वाली संस्कृतियों का तिथिक्रम भी निर्धारित किया जाता है| उत्तर भारत के पुरातत्व में यह पात्र परम्परा तिथि-क्रम का सुदृढ़ आधार प्रस्तुत करती है जिस पर उत्तरी काली चमकीली मृदभांड परम्परा के पहले की

पुरातात्विक संस्कृतियों के तिथिक्रम का निर्धारण किया जा सकता है| मार्टीमर ह्वीलर के अनुसार भारत के पुरस्थालों पर यह पात्र-परम्परा उसी प्रकार विशिष्ट है जिस प्रकार यूरोप महाद्वीप के भूमध्यसागर के तटवर्ती क्षेत्रों में 'टेरा सिगिलाटा' नाम की पात्र-परम्परा हैं|

<u>नामकरण</u> : इस पत्र परंपरा का नामकरण मार्टीमर ह्वीलर एवं कृष्णदेव द्वारा उत्तरी काली चमकीली मृदभांड-परम्परा(ओपदार पात्र-परम्परा) किया गया किया गया था| लेकिन हम देखते है कि इस तरह के पात्र-खण्ड केवल उत्तरी भारत से ही नहीं अपितु पूर्वी, दक्षिणी और पश्चिमी भारत तथा पाकिस्तान में भी मिलते है|

<u>प्रसार</u> : हम देखते है की यह पात्र परम्परा भारत ही नहीं अन्य भू-भाग जैसे पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान तक विस्तृत थी| उत्तर-पश्चिम में इस तरह के पात्र-खण्ड बेग्राम (अफगानिस्तान), तक्षशिला (रावलपिंडी, जिला पाकिस्तान), चरसद्दा (पेशावर, जिला पाकिस्तान) और उदयग्राम (पेशावर, जिला पाकिस्तान) आदि जगहों से मिले हैं| उत्तर में इस प्रकार के ठीकरे नेपाल की तराई क्षेत्र में स्थित तिलौराकोट से प्राप्त हुए हैं| पश्चिम भारत में गुजरात प्रान्त के अंतर्गत अरब सागर के तट पर स्थित प्रभास पाटन इसकी पश्चिमी सीमा निर्धारित करता है| महाराष्ट्र में नासिक तथा बहाल दो एन.बी.पी. के प्रमुख पुरास्थल हैं| पूर्व दिशा में पश्चिम बंगाल के तामलुक, चंद्रकेतुगढ़ और बांग्लादेश के बानगढ़ (दिनाजपुर जिला) तथा पहाडपुर (राजशाही जिला) से भी इस

प्रकार के पात्र मिले हैं| दक्षिण-पूर्व में इसका प्रसार उड़ीसा प्रान्त के शिशुपालगढ़ तक मिलता हैं| दक्षिण भारत में इस प्रकार के पात्र-खंड नागार्जुनकोंडा आदि से प्राप्त हुए हैं| इस प्रकार हम कह सकते है कि सुदूर दक्षिण भारत को छोड़कर उत्तरी काली चमकीली पात्र-परम्परा का अधिक्य गंगा के मैदान तथा उसके समीपवर्ती क्षेत्रों में ही मिलता है|

पात्र प्रकार : उत्तरी काली चमकीली पात्र-परम्परा निर्माण अच्छी प्रकार से गुंथी एवं मर्दित मिट्टी से किया जाता था| यह पात्र-परम्परा धीमी गति से चलने वाले चाक पर निर्मित प्रतीत होती हैं| बर्तन अत्यंत ऊँचे तापक्रम वाले आँच पर पकाए गए है इसलिए उनमे धातु के बने बर्तनों की तरह ही फिनिश और खनक मिलती है| इसके प्रमुख पात्र प्रकारों में सीधे किनारे वाली थालियाँ, कटोरे, ढक्कन, स्पष्ट कोखवाली(Sharply carinated) हांडियाँ तथा छोटे आकार के कलश प्रमुख पात्र प्रकार हैं|

एन.बी.पी. के अधिकांश मृदभांड काले रंग के मिलते है लेकिन इसके आलावा सुनहले, रुपहले, चाकलेटी, गुलाबी एवं नीले रंग के भी पात्र मिलते हैं| इस मृदभांड परम्परा के बर्तनों पर विशेष प्रकार की चमक अथवा दीप्ती मिलती हैं|

चित्रण तथा अलंकरण : महाराष्ट्र के बहाल तथा उत्तरप्रदेश के हस्तिनापुर, कौशाम्बी और श्रावस्ती आदि पुरास्थलों से एन.बी.पी. के ऐसे नमूने प्राप्त हुवे है जिन पर चित्रकारी मिलती है| प्रमुख अलंकरण में

पट्टी अथवा धारियाँ, बिंदु समूह, पाश(Loop), लहरियाँ(Wavy lines), अर्धवृत्त, रेखाएँ, संकेंद्रित वृत्त आदि मिलती हैं| अलंकरण काली, गुलाबी, पिंगल(Tan), गहरी भूरी तथा बादामी सतह पर मिलते है|

उत्तरप्रदेश के मेरठ जिले की मवाना तहसील में स्थित हस्तिनापुर के टीले के उत्खनन से भी एन.बी.पी. पात्र-परम्परा के तिथि क्रम पर समुचित प्रकाश पड़ता हैं| हस्तिनापुर के उत्खनन से प्राप्त पाँच सांस्कृतिक कालों में तृतीय काल का संबंध उत्तरी काली चमकीली मृदभांड परम्परा से है| हस्तिनापुर में एन.बी.पी. के तृतीय काल को छठी शताब्दी ई०पू० के बीच रखा गया है| इसी प्रकार कौशाम्बी में एन.बी.पी. के तृतीय (सम्प्रति चतुर्थ) काल का तिथिक्रम 605 ई०पू० से 45 ई०पू० के बीच निर्धारित किया गया है|

उत्तरी काली चमकीली मृदभांड जनसाधारण द्वारा प्रयुक्त होने वाले मृदभांड नहीं थे| यह अभिजात्य वर्ग के द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली पात्र परम्परा थी| इस कथन की पुष्टि सोनपुर, कुम्हरार, बैराट तथा रोपड़ आदि के उत्खनन से मिले जोड़े गए पात्रों से हो जाती हैं|